श्री कालिका सहस्रनाम स्तोत्र

श्री शिव उवाच

कथितोऽयं महामन्त्रः सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः ।
यामासाद्य मया प्राप्तमैऽश्वर्यपदमुत्तमम् ।।
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त विधिना भवान् ।
कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्यविजिगीषया ।।

भावार्थ—श्री शिवजी ने कहा—सब मन्त्रों में उत्तमोत्तम यह महामन्त्र है, जिसे पाकर मैंने ऐश्वर्यपूर्ण उत्तम पद को प्राप्त किया है। आप परम भक्तिपूर्वक यथोक्तविधि से त्रैलोक्य पर विजय पाने की इच्छा से देवी का पूजन करें।

श्री राम उवाच

प्रसन्नो यदि मे देव परमेश पुरातन ।
रहस्यं परमं देव्याः कृपया कथय प्रभो ।।
विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिं ।
विना गंधं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां ।।
प्राणायामं विनाध्यानं विना भूतविशोधनम् ।
विनादानं विना जापं येन काली प्रसीदति ।।

श्री राम ने कहा—हे देव ! हे परमेश ! हे पुरातन ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो हे प्रभो ! देवी के परम रहस्य को कृपा पूर्वक कहिए।

पूजन, होम, न्यास, बलि, गन्ध, पुष्प, नित्यकर्म, प्राणायाम, ध्यान, भूत शुद्धि, दान, जप आदि के बिना काली देवी जिस प्रकार प्रसन्न होती हैं, उसे बताने की कृपा करें।

शिव उवाच

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंश समुद्भव।
भक्तानामपि भक्तोसि त्वमेव साधयिष्यसि ॥
देवीं दानव कोटिघ्नीं लीलया रुधिर प्रियाम्।
सदा स्तोत्र प्रियामुग्रां कामकौतुक लालसां ॥
सर्वदानन्द हृदयामासवोत्सव मानसाम्।
माध्वी कमत्स्यमांसानुरागिणीं वैष्णवीं पराम् ॥
श्मशानवासिनीं प्रेतगण नृत्यमहोत्सवाम्।
योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम् ॥
तामुग्रकालिकां राम प्रसीदयितुमर्हसि।
तस्याः स्तोत्रं परं पुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् ॥
तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम् ॥
यस्यैक कालपठनात् सर्वे विघ्नाः समाकुलाः।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः ॥
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गङ्गाप्रवाहवत्।
तस्यदर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः ॥
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः।
राजानो ऽपि च दासत्वं भजंते किं परे जनाः ॥
निशीथे मुक्तकेशस्तुः नग्नः शक्ति समाहितः।
मनसा चिन्तयेत् कालीं महाकालेन चालितां ॥
पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम्।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानु कम्पते ॥
यथा ब्रह्मामृतैर्ब्रह्मकुसुमैः पूजिता परा।
प्रसीदति तथानेन स्तुता काली प्रसीदति ॥

भावार्थ—शिवजी ने कहा—हे भृगुवंश में उत्पन्न बुद्धिमान् राम! तुमने उत्तम प्रश्न किया है। तम भक्तों में श्रेष्ठ हो, तुम्हीं साधना करोगे।

खेल ही खेल में करोड़ों दानवों का वध करने वाली, रुधिर-प्रिया, सदैव स्तोत्र को चाहने वाली, काम-कौतुक की लालसा वाली, सदैव आनन्दित-हृदय वाली, माधवी नामक सुरा तथा मत्स्य-मांस की अनुरागिणी, परा वैष्णवी, श्मशान वासिनी, प्रेतगणों के साथ नृत्य-महोत्सव करने वाली, योग-सिद्धि से युक्त योगीश्वरी तथा योगियों के हृदय में निवास करने वाली उस उग्रकालिका देवी को हे राम ! तुम्हें प्रसन्न करना चाहिए। उसका स्तोत्र अत्यन्त पुण्यमय है, जिसे उस काली ने स्वयं ही प्रकट किया है। मैं तुमसे उसे कहूंगा। हे वत्स! तुम उसे सुनकर हृदयङ्गम करो। उसे प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए तथा श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ जानकर उसका पाठ करना चाहिए।

इस स्तोत्र का एक ही बार पाठ करने से समस्त विघ्न उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार कि प्रज्ज्वलित अग्नि में सभी पतंगे भस्म हो जाते हैं। इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक की वाणी गंगा के प्रवाह की भांति गद्यपद्यमयी हो जाती है और उसके दर्शनमात्र से ही वादी लोग निष्प्रभ हो जाते हैं। उसके हाथ में सभी सिद्धियां बनी रहती हैं, इसमें सन्देह नहीं है। राजा लोग भी उसकी दासता मानते हैं, फिर अन्य लोगों की तो बात ही क्या है।

रात्रि के समय खुले केश तथा नग्न होकर शक्ति के साथ महा-काल द्वारा प्रसन्न की गई काली का मन में ध्यान करे तथा मोक्ष के साधन स्वरूप सहस्रनाम वाले स्तोत्र का पाठ करे, तो ऐसे भक्त पर काली देवी प्रसन्न होकर पुत्रभाव से कृपा करती हैं।

जिस प्रकार ब्रह्मामृत तथा ब्रह्मकुसुमों से पूजित होकर पराशक्ति प्रसन्न होती है, उसी प्रकार इस स्तोत्र का पाठ किये जाने पर भी कालीदेवी प्रसन्न होती हैं।

विनियोग

अस्य श्री दक्षिण कालिका सहस्रनाम स्तोत्रस्य महाकालभैरव

ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः।

भावार्थ—इस श्री दक्षिण कालिका सहस्रनाम स्तोत्र के महाकाल भैरव ऋषि हैं, त्रिष्टुप् छन्द है तथा श्मशानकाली देवता हैं। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के लिए इसका विनियोग है।

कालिका सहस्रनाम स्तोत्र

श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी।
कालभैरव भार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरूपिणी।
कस्तूरीरस लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर गामिनी॥
ककारवर्ण सर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती॥
कांता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गति नाशिनी॥
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलिशांगी जी क्रीङ्कारी कमला कला॥
करालास्या कराली च कुलकांतापराजिता।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला॥
नीला घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।
वज्राङ्गी वज्रकङ्काला नृमुण्डस्रग्विणी शिवा॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त विभूषणा।
रक्तचन्दन सिक्ताङ्गी सिंदूरारुण मस्तका॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा।

महादंष्ट्रा महामाया सुदन्ती युगदन्तुरा ॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेताम्बुजेक्षणा ॥
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ।
प्रफुल्लपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ।
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी ।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी ॥
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा ।
प्रेतदेहाकर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ॥
प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता ।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी ॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य विभूषणा ।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाशिनी ॥
नृमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नतस्तनी ॥
दिगम्बरी घोररावा सृक्कान्तरक्तवाहिनी ।
घोररावा शिवासंगा निःसंगा मदनातुरा ॥
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धुनिवासिनी ।
अभिमत्तामहामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी ॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा ।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा ॥
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी ।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी ॥
जगज्जीवमयी हैमवती माया महालया
नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी ।
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी ।
मोहरात्रि महारात्रि दारुणाभा सुरासुरी ॥
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनीजरा ।

राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥
श्रुतिस्मृति महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी ।
चिंताचिंता स्वधा स्वाहा निद्रातंद्रा च पार्वती ॥
अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्यातपस्विनी ।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा ॥
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा ।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती ॥
स्रोतस्वती स्रोतवती मातंगी विजया जया ।
नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्य निवासिनी ॥
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी ।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी ॥
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी ।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ॥
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा ।
डाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया ॥
भ्रान्तिर्भव रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी ।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चेन्द्रस्वरूपिणी ॥
सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान् ।
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ।'
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा ।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा ॥
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया ।
तमिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥
चार्वङ्गी चंचला लोलजिह्वा चारु चरित्रिणी ।
त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती ॥
सत्त्ववती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी ।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा ॥
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती ।

वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया ॥
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा ।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा ॥
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी ।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ॥
रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा ।
शङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी ।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी ॥
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता ।
जटिनी बिम्बिनी नीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका ॥
बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र माथिनी ।
महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका ॥
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परहस्तिनी ।
रक्तप्रिया मांसरुचिरा सवासरक्तमानसा ॥
गलच्छोणित मुण्डालिकण्ठमाला विभूषणा ।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी ॥
व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलिनी सिंहवाहिनी ।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभाविनी ॥
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ।
सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ॥
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी ।
अमोघा ऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगव त्यनुवादिनी ॥
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालमुख्य सुरान्तका ।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ॥
मदिरा मदिरान्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी ।
सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ॥
जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जयशालिनी ।

सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभ कारिणी ॥
शिवदूती भूतिमती विभूतिर्भीषणानना ।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ॥
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपति प्रिया ।
सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता ॥
धनिष्ठा धनदा धन्यावसुधा स्वप्रकाशिनी ।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ॥
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवना ।
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी ॥
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ।
कार्त्तिकी कीर्त्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा ॥
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ।
त्रैलोक्य जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी ॥
तडाग निम्नजठरा शुष्कमांसास्थि मालिनी ।
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्यपावनीश्वरी ॥
व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्त्तिः शर्वरी भीमनादिनी ।
क्षेमङ्करी शंकरी च सर्वसम्मोह कारिणी ॥
अर्द्धतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ।
अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमङ्गला ॥
सर्वप्रियंकरी भोग्या धरणी पिशिताशना ।
भयङ्करी पापहरा निष्कलङ्का वशङ्करी ॥
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रान्या वायुवेगिनी ।
सहस्रसूर्यसंकाशा चन्द्रकोटि समप्रभा ॥
वह्नि मण्डलसंस्था च सर्वतत्त्व प्रतिष्ठिता ।
सर्वाचारवत सर्वदेवकन्याधिदेवता ॥
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका ।
इज्या पूज्या विभीर्भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्मरूपिणी ॥
रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहूः ।

मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी ॥
ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी ।
आधाररूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी ॥
अज्ञा प्रज्ञापूर्णमनाश्चन्द्र मुख्यनुकूलिनी ।
वावदूका निम्ननाभिः सत्या संध्या दृढ़व्रता ॥
आन्वीक्षिकी दंडनीति स्त्रयी त्रिदिव सुन्दरी ।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी ॥
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा ।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिंगिनी ॥
भुक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा ।
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्वनिवासिनी ॥
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ॥
पिंगला कपिला जिह्वारसज्ञा रसिका रसा ।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तका ॥
पाञ्चाली रुक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका
अमृतातुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ॥
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीर सुन्दरी ।
उग्रतारा यशोदाख्या दैवकी देवमानिता ॥
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका ।
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा ॥
योगेश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दुरूपिणी ।
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरी प्रभा ॥
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशंडी प्रकटा तिथिः ।
द्रविणी गोपनी माया कामबीजेश्वरी क्रिया ॥
शांभवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा ।
अमेय विक्रमा क्रूरा सम्पत्शाला त्रिलोचना ॥
सुस्त्रीहव्य वहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा ।

तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणीधारा ।।
त्रिखंडा बोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ।
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनिरूपिणी ।।
अनंगकुसुमानंगमेखलानंगरूपिणी ।
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ।।
षडंगयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी ।
दुराशया दुराधारा दुर्जेया दुर्गरूपिणी ।।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ।।
त्रिकोण निलया नित्या परमामृतरञ्जिता ।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी ।।
त्वरिता भक्ति संसक्ता भक्तवश्या सनातनी ।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशङ्करी ।।
सर्वसौन्दर्य निलया सर्वसौभाग्य शालिनी ।
सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्य निरूपिणी ।।
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रत चारिणी ।
कुमारीभक्ति सुखिनी कुमारीरूपधारिणी ।।
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदा प्रिया ।
कुमारी सेवकासंगा कुमारी सेवकालया ।।
आनन्दभैरवी बाला भैरवी बटुक भैरवी ।
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी ।।
महाभैरव पत्नी च परमानन्द भैरवी ।
सुधानन्दभैरवी च उन्मादानन्द भैरवी ।।
मुक्तानन्द भैरवी च तथा तरुण भैरवी ।
ज्ञानानन्दभैरवी च अमृतानन्द भैरवी ।।
महाभयङ्करी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी ।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ।।
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी ।

महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥
महांकुश स्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा ।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुर सुन्दरी ।
सिन्दूर पूर रुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥
सर्वाङ्ग सुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयिणी ।
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी ॥
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनरूपधृक् ।
चामरी बालकुटिलनिर्मल श्यामकेशिनी ॥
वज्रमौक्तिक रत्नाढ्य किरीट मुकुटोज्ज्वला ।
रत्नकुण्डल संसक्त स्फुरद्गण्ड मनोरमा ॥
कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्तारञ्जित नासिका ।
मुक्ताविद्रुम माणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥
सूर्यकान्तेन्दु कान्ताढ्य स्पर्शाश्मकंठभूषणा ।
बीजपूरस्फुरद्बीज दन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥
कामकोदण्डकाभुग्नभ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ।
मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ॥
मनोज्ञ शष्कुली कर्णा हंसीगति विडम्बिनी ।
पद्मरागांगद ज्योतिर्दोश्चतुष्कप्रकाशिनी ॥
नानामणि परिस्फूर्जच्छुद्ध कांचन-कंकना ।
नागेन्द्रदन्त निर्माणवलयांकित पाणिनी ॥
अंगुरीयक चित्रांगी विचित्र क्षुद्रघण्टिका ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीर शिंजिनी ॥
कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुम द्रव लेपिता ।
विचित्र रत्न पृथिवी कल्प शाखि तलस्थिता ॥
रत्नद्वीप स्फुरद्रक्त सिंहासन विलासिनी ।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी ।
सहस्रदलपद्मान्त श्चन्द्रमण्डलवर्तिनी ॥

ब्रह्मरूपशिव क्रोडनानासुख विलासिनी ।
हर विष्णु विरिञ्चीन्द्र ग्रहनायक सेविता ॥
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी ।
मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्द मेखला ॥
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता ।
माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी ॥
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपा सुमेखला ।
गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी ॥
पिङ्गला ब्रह्मसूत्री च सुषुम्ना चैव गन्धिनी ।
आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद् योनिरयोनिजा ॥
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी ।
भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी ॥
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुराभैरवी तथा ।
लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधृक् ॥
लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती ।
भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा ॥
गृध्ररूपा शिवारूपा चक्रिणी चक्ररूपधृक् ।
लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया लिंगनिवासिनी ॥
लिंगस्था लिंगनी लिंगरूपिणी लिंगसुन्दरी ।
लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा ॥
लिंगनामसदानन्दा भगनामसदागतिः ।
लिंगमालाकण्ठभूषा भगमाला विभूषणा ॥
भगलिंगामृतप्रीता भगलिंग स्वरूपिणी ।
भगलिंगस्य रूपा च भगलिंग सुखावहा ।
स्वयम्भू कुसुमप्रीता स्वयम्भू कुसुमार्चिता ।
स्वयम्भू कुसुमप्राणा स्वयम्भू पुष्पतर्पिता ॥
स्वयम्भू पुष्प घटिता स्वयम्भू पुष्पधारिणी ।
स्वयम्भू पुष्पतिलका स्वयम्भू पुष्प चर्चिता ॥

स्वयम्भू पुष्पनिरता स्वयम्भू कुसुमग्रहा ।
स्वयम्भू पुष्पयज्ञांशा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ॥
स्वयम्भू पुष्पनिचिता स्वयम्भू कुसुमप्रिया ।
स्वयम्भू कुसुमादान लालसोन्मत्तमानसा ॥
स्वयम्भू कुसुमानन्दलहरी स्निग्धदेहिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमाधारा स्वयम्भू कुसुमाकुला ।
स्वयम्भू पुष्पनिलया स्वयम्भू पुष्प वासिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमस्निग्धा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ।
स्वयम्भू पुष्पकरिणी स्वयम्भू पुष्पबाणिका ॥
स्वयम्भू कुसुमध्याना स्वयम्भू कुसुम प्रभा ।
स्वयम्भू कुसुमज्ञाना स्वयम्भू पुष्पभागिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमोल्लासा स्वयम्भू पुष्पवर्षिणी ।
स्वयम्भू कुसुमोत्साहा स्वयम्भू पुष्परूपिणी ॥
स्वयम्भू कुसुमोन्मादा स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी ।
स्वयम्भू कुसुमाराध्या स्वयम्भू कुसुमोद्भवा ॥
स्वयम्भू कुसुमव्याग्रा स्वयम्भू पुष्पपूर्णिता ।
स्वयम्भू पूजक प्रज्ञा स्वयम्भू होतृमातृका ॥
स्वयम्भू दातृरक्षित्री स्वयम्भू रक्ततारिका ।
स्वयम्भू पूजकप्रस्ता स्वयम्भू पूजक प्रिया ॥
स्वयम्भू वन्दकाधारा स्वयम्भू निन्दकान्तका ।
स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा स्वयम्भू प्रदपुत्रिणी ॥
स्वयम्भू प्रद सस्मेरा स्वयम्भू प्रदशरीरिणी ॥
सर्वकालोद्भव प्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका ।
सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवोद्भवा ।
कुण्डपुष्प सदा प्रीतिर्गोलि पुष्पसदारतिः ।
कुण्डगोलोद्भव प्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥
स्वयम्भू वा शिवा धात्री पावनी लोकपावनी ।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी ॥

अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चन्द्रमण्डला।
सूक्ष्मा सूक्ष्मा वलाका च वरदा भयनाशिनी॥
वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्ध विनाशिनी।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी॥
दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ प्रकाशिनी।
दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्वकार्य विनाशिनी॥
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धु निवासिनी।
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजा सदारतिः॥
शुक्रपूज्या शुक्रहोम सन्तुष्टा शुक्रवत्सला।
शुक्रमूर्त्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र संस्पृहा शुक्रसुन्दरी।
शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्याति शुक्रिणी॥
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दक वन्दिता॥
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका।
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा॥
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दक नाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्पत् शुक्राकर्षण कारिणी॥
शारदा साधक प्राणा साधका सक्त मानसा।
साधकोत्तम सर्वस्वा साधकाभक्तरक्तपा॥
साधकानन्द सन्तोषा साधकानन्द कारिणी।
आत्म विद्या ब्राह्म विद्या परब्रह्म स्वरूपिणी॥
त्रिकूटस्था पञ्चकूटा सर्वकूटशरीरिणी।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमाला विधायिनी॥

टिप्पणी—श्री महाकाली के सहस्र नामों का उल्लेख उक्त श्लोकों में किया गया है।

इति श्री कालिका नाम सहस्रं शिवभाषितम्।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षात् महापातक नाशनम्॥

पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
लभते गाणपत्यं स य: पठेत साधकोत्तम: ॥
य: पठेत पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदथ ।
सर्वपाप विनिर्मुक्त: स याति कालिकापुरम ॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि य: कश्चिन्मानव: स्मरेत् ।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ॥
वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ।
श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्रान् लभते चिरजीविन: ॥
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
देवीपाद प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम् ॥

भावार्थ—शिवजी द्वारा कहा गया यह श्री कालिका सहस्रनाम स्तोत्र गुप्त से भी गुप्त है तथा महान् पापों को नष्ट करने वाला है ।

पूजाकाल में, रात्रि में तथा दोनों सन्ध्याओं में जो भी श्रेष्ठ साधक इसका पाठ करता है, वह गणपति को प्राप्त कर लेता है । जो व्यक्ति इसे पढ़ता अथवा पढ़ाता और सुनता अथवा सुनाता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर देवी कालिका के लोक को जाता है ।

जो कोई मनुष्य श्रद्धा अथवा अश्रद्धा से इसका स्मरण करता है, वह कठिनाइयों के सैकड़ों दुर्गों को पार करके परमगति को प्राप्त होता है ।

वन्ध्या, काकवन्ध्या अथवा मृतवत्सा—जो भी स्त्री इस स्तोत्र को सुनती है, वह दीर्घजीवी पुत्रों को प्राप्त करती है ।

इस स्तोत्र का पाठ करने वाला मनुष्य जिस वस्तु की कामना करता है, वह उसे देवी के चरणों की कृपा से निश्चितरूप में प्राप्त होती है ।

इति श्रीकालिका कुल सर्वस्वे कालिका सहस्र नाम स्तोत्रम् समाप्तम् ।